Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RAS/RTS)

राजस्थान का इतिहास, कला, संस्कृति, परंपरा एवं विरासत

(भाग-1)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: RJPM01

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RAS/RTS)

राजस्थान का इतिहास, कला, संस्कृति, परंपरा एवं विरासत

(भाग–1)

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
टोल फ्री : 1800-121-6260
Web : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

RAS DLP विषय सूची (Contents)

1. राजस्थान का इतिहास **5–55**

1.1 प्रागैतिहासिक काल से 18वीं शताब्दी के अवसान तक राजस्थान के इतिहास के प्रमुख सोपान 5

1.2 राजस्थान की प्रमुख प्राचीन सभ्यताएँ 8

1.3 राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्रोत 12

1.4 राजस्थान के प्रमुख राजवंश 17

1.5 राजस्थान के प्रमुख युद्ध 30

1.6 राजस्थान के प्रमुख साका एवं जौहर 32

1.7 राजवंशों की प्रशासनिक व राजस्व व्यवस्था 34

1.8 राजस्थान के प्रमुख सामाजिक एवं सांस्कृतिक मुद्दे 38

1.9 प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल 40

1.10 राजस्थान के ऐतिहासिक व्यक्तित्व 46

1.11 राजस्थान के इतिहास के प्रमुख सोपान 48

2. राजस्थान का स्वतंत्रता संग्राम **56–96**

2.1 1857 की क्रांति 57

2.2 17वीं-20वीं शताब्दी की प्रमुख घटनाएँ 63

2.3 राजस्थान में जनजागरण एवं राजनीतिक जागृति 66

2.4 राजस्थान के किसान आंदोलन 72

2.5 राजस्थान के जनजाति आंदोलन 82

2.6 प्रदेश के प्रमुख रियासतकालीन प्रजामंडल आंदोलन 84

2.7 राजस्थान में राजनीतिक एकीकरण 90

3. राजस्थानी कला **97–148**

3.1 स्थापत्य कला 97

3.2 मूर्तिकला 116

3.3 चित्रकला 124

3.4 हस्तशिल्प कला 135

4. राजस्थानी संस्कृति **149–192**

4.1 राजस्थान के धर्म-सुधार आंदोलन 150

4.2 राजस्थान के धर्म एवं संप्रदाय 157

4.3 राजस्थान के प्रमुख लोक-देवी-देवता 164

4.4 राजस्थान के प्रमुख मेले/पर्व एवं त्यौहार 173

4.5 राजस्थान की परंपरा एवं विरासत 184

अध्याय
1

राजस्थान का इतिहास (History of Rajasthan)

1.1 प्रागैतिहासिक काल से 18वीं शताब्दी के अवसान तक राजस्थान के इतिहास के प्रमुख सोपान *(From the Prehistoric Period to the End of the 18th Century, the Main Steps Towards the History of Rajasthan)*

राजस्थान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि *(Historical background of Rajasthan)*

प्रारंभिक समय से ही राजस्थान अपने गौरवशाली अतीत तथा सांस्कृतिक मूल्यों के लंबे इतिहास की परंपरा को सँजोए हुए है। किसी भी काल तथा स्थान विशेष का इतिहास अपने कुछ महत्त्वपूर्ण सोपानों के आधार पर बनता है, जिसमें कुछ निर्णायक घटनाएँ तथा मोड़ आते हैं, जो आने वाले समय की धारा को लंबे समय तक प्रभावित करते हैं। इतिहास के इन महत्त्वपूर्ण सोपानों का अध्ययन कर संपूर्ण इतिहास के परिवर्तनमूलक बदलावों को समझा जा सकता है।

राजस्थान के संदर्भ में समय-समय पर ऐसे बदलाव इतिहास का हिस्सा रहे हैं, जो वृहद् स्तर पर घटने वाली विभिन्न घटनाओं तथा भारतीय प्रायद्वीप के समकालीन इतिहास से भी प्रभावित होते रहे।

इन बदलावों तथा सोपानों का अध्ययन करने के क्रम में विभिन्न पुरातात्त्विक, पुरालेखीय एवं समकालीन साहित्य की उपलब्ध कृतियों से इस संबंध में जानकारियाँ प्राप्त होती गईं तथा इन स्रोतों के अध्ययन एवं विश्लेषण द्वारा इतिहास लेखन की समृद्ध परंपरा का विकास राजस्थान के विशेष संदर्भ में भी संभव हुआ।

प्राचीनकालीन ग्रामीण एवं नगरीय जीवन के अध्ययन में जहाँ उत्खनन से प्राप्त पुरातात्त्विक सामग्रियाँ महत्त्वपूर्ण हैं तथा आहड़ (उदयपुर), कालीबंगा (हनुमानगढ़), गिलुंड (राजसमंद) व गणेश्वर (सीकर) की सभ्यताओं द्वारा विकास क्रम को समझने में सहायता मिलती है, वहीं साहित्यिक स्रोतों में कवि श्यामलदास कृत **वीर विनोद**, गौरीशंकर हीराचंद 'ओझा' द्वारा लिखित **राजपूताने का प्राचीन इतिहास** तथा कर्नल जेम्स टॉड द्वारा लिखित **एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान** नामक पुस्तकें भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं।

राजस्थान के इतिहास के विविध आयामों तथा पहलुओं को समझने की दृष्टि से विभिन्न शिलालेखों, प्रस्तर प्रशस्तियों तथा स्मारकों की भी उल्लेखनीय भूमिका है।

मरुभूमि में बागौर जैसे मध्यपाषाणकालीन और नवपाषाणकालीन इतिहास की उपस्थिति प्रस्तुत करने वाले स्थल हैं। कालीबंगा, आहड़, गणेश्वर व बैराठ जैसी पाषाणकालीन, सिंधुकालीन और ताम्रकालीन सभ्यताओं का विकास यहाँ हुआ जो इसके इतिहास की प्राचीनता सिद्ध करती हैं। इन प्राचीन स्थलों पर मानव बस्तियों के प्रमाण मिले हैं। कालीबंगा जैसे पाषाणकालीन एवं आहड़ जैसे सिंधुकालीन स्थलों का विकास यहीं पर हुआ है। आहड़ व गणेश्वर जैसी ताम्रकालीन सभ्यताओं का भी जन्म यहीं पर हुआ है।

राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएँ व जनजीवन *(Ancient human civilizations and life of Rajasthan)*

राजस्थान के पुरातात्त्विक स्रोतों के सर्वेक्षण का कार्य सर्वप्रथम **ए.सी.एल. कार्लाइल** ने किया था। तत्पश्चात् वृहद् स्तर पर इसे डी.आर. भंडारकर, दयाराम, एच.डी. सांकलिया, बी.बी. लाल, जीवन खरकवाल तथा आर.सी. अग्रवाल जैसे विद्वानों ने अंजाम तक पहुँचाया।

राजस्थान की अरावली श्रेणियों तथा चंबल नदी घाटी के क्षेत्रों में प्राक् ऐतिहासिक विभिन्न शैलाश्रयों की प्राप्ति हुई है, जिसमें विभिन्न अस्थि-अवशेष, पाषाण (प्रस्तर) निर्मित उपकरण मिले हैं। इन्हीं शैलाश्रयों पर मानव निर्मित शैलचित्रों से

- 1741 – जयपुर व जोधपुर के शासकों के बीच 'गंगवाना युद्ध', पेशवा व सवाई जयसिंह द्वारा 'धौलपुर समझौता'।
- 1747 – 'राजमहल युद्ध' (टोंक) ईश्वरी सिंह द्वारा माधो सिंह पराजित।
- 1748 – बगरू युद्ध – ईश्वरी सिंह व माधो सिंह के बीच, माधो सिंह विजयी।
- 1787 ई. – तूंगा युद्ध – जयपुर व जोधपुर ने मराठों को पराजित किया।
- 1800 – जॉर्ज टॉमस द्वारा 'राजपूताना' शब्द का सर्वप्रथम इस्तेमाल।
- 1807 – गिंगोली युद्ध – जोधपुर पर जयपुर की विजय।
- 1857 – ब्रिटिश सेना में भारतीय सैनिकों द्वारा एरिनपुरा (जोधपुर), नसीराबाद (अजमेर) व आबू में विद्रोह, कोटा व आबू में जनविद्रोह, भरतपुर, अलवर, टोंक धौलपुर व देवली छावनी में भी विद्रोह की घटनाएँ।
- 1889 ई. – वाल्टर हितकारिणी सभा की स्थापना।
- 1877 – उदयपुर में विवाह संबंधी विवादों के निपटान संबंधी हितैषिणी सभा की स्थापना।
  - ◆ दयानंद सरस्वती द्वारा उदयपुर में 'सत्यार्थ प्रकाश' का प्रकाशन।
- 1885 – सर्वप्रथम 'राजपूताना गजट' समाचार-पत्र का प्रकाशन।
- 1897 – बिजोलिया किसान आंदोलन प्रारंभ।
- 1907 ई. – चूरू में स्वामी गोपाल दास तथा पं. कन्हैयालाल ढूँढ़ द्वारा 'सर्वहितकारिणी सभा' की स्थापना।
- 1920 – राजस्थान सेवा संघ व मारवाड़ सेवा संघ की स्थापना।
- 1921 – बेगूँ का किसान आंदोलन प्रारंभ, नरेंद्र मंडल ने कार्य आरंभ किया, बीकानेर नरेश गंगा सिंह अध्यक्ष।
- जोधपुर में 'मारवाड़ हितकारिणी सभा' की स्थापना चांदमल सुराणा द्वारा 1918 ई. में की गई थी, किंतु यह संस्था अधिक सक्रिय नहीं हो सकी। बाद में 1920 ई. में जयनारायण व्यास द्वारा 'मारवाड़ सेवा संघ की स्थापना की गई, यह संस्था भी निर्जीव सी हो गई। अत: पुरानी संस्था मारवाड़ हितकारिणी सभा को 1921 ई. में पुनर्जीवित किया गया।
- 1925 – नीमूचणा हत्याकांड।
- 1927 – देशी राज्य लोक परिषद की स्थापना।
- 1929 – बाल-विवाह रोकने हेतु 'शारदा एक्ट' पारित।
- 1932 – पुष्कर में मारवाड़ प्रजा परिषद का आयोजन।
- 1934 ई. – सिरोही प्रजामंडल स्थापित।
- 1938 – मेवाड़, भरतपुर व अलवर में प्रजामंडलों की स्थापना, मेवाड़ लोक परिषद की स्थापना।
- 1939 – गोकुल भाई भट्ट द्वारा सिरोही प्रजामंडल की स्थापना।
- 1950 – विभिन्न प्रजामंडलों, रियासतों को मिलाकर राजस्थान का निर्माण संपन्न।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- गुर्जर-प्रतिहार, बंगाल के पाल एवं राष्ट्रकूट के मध्य त्रिपक्षीय संघर्ष हुआ।
- भागवत संप्रदाय का उल्लेख बेसनगर अभिलेख या हेलियोडोरस में किया गया है।
- राणा कुंभा के दरबार में प्रमुख विद्वान थे– अत्रि, नापा, महेश भट्ट, मुनि सुंदर सूरी, टिल्ला भट्ट इत्यादि।
- माध्यमिका (नगरी) का उल्लेख महाभारत और महाभाष्य दोनों में मिलता है।
- 'मानकौतूहल' एक ग्रंथ है, जिसे मध्यकाल के समय ग्वालियर के राजा मानसिंह के नाम पर रचा गया। इस पुस्तक में मुस्लिमों द्वारा प्रारंभ की गई संगीत की पद्धतियों का वर्णन है।

- मध्य प्रदेश के विदिशा ज़िले में आधुनिक बेसनगर के पास ही बेसनगर स्तंभ/अभिलेख (हेलियोडोरस अभिलेख) है। इस अभिलेख में हिंद-यवनों पर वासुदेव संप्रदाय के प्रभाव का उल्लेख है।
- जोधपुर के ओसियाँ में प्राचीन काल के वैष्णव, सूर्य, शक्ति (पीपलामाता, सच्चियामाता) व जैन मंदिर प्रसिद्ध हैं। यहाँ का वैष्णव मंदिर यहाँ की स्थापत्य कला के प्रारंभिक चरण का उदाहरण माना जा सकता है। सर्वाधिक प्राचीन तीन वैष्णव मंदिरों को श्री भंडारकर ने क्रमशः हरिहर मंदिर संख्या 1, 2 व 3 नाम दिया। हरिहर मंदिर के रूप में नामकरण इन मंदिरों में गर्भगृह के पृष्ठ भाग के प्रमुख ताख में हरिहर की संयुक्त प्रतिमा को ध्यान में रखकर किया गया है। उपलब्ध साक्ष्यों के अनुसार ये सभी मंदिर 8वीं सदी के पूर्वार्द्ध के बने हैं। ये पंचायतन शैली के हैं। गुप्तकालीन वास्तुकला से प्रभावित ये मंदिर गुर्जर-प्रतिहार काल में निर्मित हुए।
- राजपूताना के बयाना क्षेत्र पर वरीक वंश ने शासन किया।
- शिवालिक अभिलेख में विग्रहराज चतुर्थ की तुलना विष्णु से की गई है, जबकि 'पृथ्वी विजय' में उसे 'मधुसंहारक' (विष्णु का एक नाम) कहा गया है।
- महाराणा कुंभा की प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं– संगीतराज, संगीत मीमांसा, सूड़ प्रबंध। संगीत राज की रचना वि.स. 1509 में चित्तौड़ में की गई, जिसकी पुष्टि कीर्ति-स्तंभ प्रशस्ति से होती है।
- चौहान व गुहिल शासक विद्वानों के प्रश्रयदाता बने रहे, जिससे जनता में शिक्षा एवं साहित्यिक प्रगति बिना अवरोध के होती रही। इसी कारण पूर्व मध्यकाल में पराभवों के बावजूद राजस्थान बौद्धिक उन्नति में नहीं पिछड़ा।
- निरंतर संघर्ष के वातावरण में वास्तुशिल्प पनपता रहा। इस समूचे काल की सौंदर्य तथा आध्यात्मिक चेतना ने कलात्मक योजनाओं को जीवित रखा। चित्तौड़, बाड़ौली, आबू के मंदिर इसके प्रमाण हैं।
- वर्तमान हाड़ौती क्षेत्र पर चौहानवंशीय हाड़ा राजपूतों का अधिकार था, जिस पर प्राचीनकाल में मीणाओं का अधिकार था। बूंदा मीणा के नाम पर ही बूँदी का नाम पड़ा।
- बूँदी के सुर्जन सिंह ने 1569 ई में अकबर की अधीनता स्वीकार की।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. प्राचीन नगर जो महाभारत और महाभाष्य दोनों में उल्लिखित हैं: **RAS (Pre) 2016**
   (1) विराट नगर (बैराठ) (2) माध्यमिका (नगरी)
   (3) रैंढ़ (4) कार्कोट
2. अभिलेख, जो प्राचीन राजस्थान में भागवत संप्रदाय के प्रभाव की पुष्टि करता है: **RAS (Pre) 2016**
   (1) घंटियाला अभिलेख
   (2) हेलियोडोरस का बेसनगर अभिलेख
   (3) बुचकला अभिलेख
   (4) घोसुंडी अभिलेख
3. राजस्थान के निम्नलिखित मंदिरों में से गुर्जर-प्रतिहार काल में निर्मित मंदिरों को चुनिये: **RAS (Pre) 2016**
   (i) आहड़ का आदिवराह मंदिर
   (ii) आभानेरी का हर्षतमाता मंदिर
   (iii) राजोरगढ़ का नीलकंठ मंदिर
   (iv) ओसियाँ का हरिहर मंदिर
   कूट:
   (1) केवल (i) और (ii) (2) केवल (i), (ii) और (iv)
   (3) केवल (ii) और (iv) (4) (i), (ii), (iii) और (iv)
4. निम्नलिखित में से कौन-सा विद्वान कुंभा के दरबार में नहीं था? **RAS (Pre) 2016**
   (1) टिल्ला भट्ट (2) मुनि सुंदर सूरी
   (3) मुनि जिन विजय सूरी (4) नापा
5. राजस्थान के इतिहास में 'पट्टा रेख' से क्या अभिप्राय है? **RAS (Pre) 2016**
   (1) आकलित राजस्व (2) सैन्य कर
   (3) आयात-निर्यात कर (4) बेगार
6. निम्नलिखित में से राजपूताना के किस क्षेत्र पर 'वरीक वंश' ने शासन किया था? **RAS (Pre) 2013**
   (1) बयाना (2) अलवर
   (3) बदनौर (4) ओसियाँ

7. निम्नलिखित में से किस शासक के राज्यकाल के दौरान दिल्ली शिवालिक स्तंभ अभिलेख उत्कीर्ण कराया गया था? **RAS (Pre) 2013**
(1) पृथ्वीराज-द्वितीय (2) पृथ्वीराज-तृतीय
(3) अर्णोराज (4) विग्रहराज-चतुर्थ

8. मध्यकालीन राजस्थान के राज्यों में शासक के बाद सबसे महत्त्वपूर्ण अधिकारी जाना जाता था: **RAS (Pre) 2013**
(1) संधिविग्रहिक के रूप में
(2) प्रधान के रूप में
(3) महामात्य के रूप में
(4) मुख्यमंत्री के रूप में

9. निम्नलिखित में से कौन-सा ग्रंथ कुंभा की रचना नहीं है? **RAS (Pre) 2013**
(1) नृत्यरत्नकोष (2) कलानिधि
(3) रसिकप्रिया (4) सूड़ प्रबंध

10. निम्नलिखित युद्ध राजस्थान के इतिहास में सीमा चिह्न हैं: **RAS (Pre) 2013**
(i) खानवा का युद्ध (ii) भटनेर का युद्ध
(iii) गिरी-सुमेल युद्ध (iv) हल्दीघाटी का युद्ध
इन युद्धों को सही तिथि क्रम में रखते हुए, सही उत्तर का चयन कीजिये-
(1) (ii), (i), (iii), (iv) (2) (i), (ii), (iii), (iv)
(3) (i), (iii), (iv), (ii) (4) (i), (ii), (iv), (iii)

11. निम्नलिखित में से अशोक के किस अभिलेख में पारंपरिक अवसरों पर बलि पर रोक लगाई गई है, ऐसा लगता है कि यह पाबंदी पशुओं के वध पर थी? **RAS (Pre) 2013**
(1) शिला अभिलेख I (2) शिला अभिलेख V
(3) शिला अभिलेख IX (4) शिला अभिलेख XI

*12. राजस्थान में जहाँगीर का महल कहाँ स्थित है? **RAS (Pre) 2013**
(1) किशनगढ़ (2) डीग
(3) अजमेर (4) पुष्कर

13. महान संस्कृत कवि एवं नाटककार राजशेखर निम्नलिखित में से किसके दरबार से संबंधित था? **RAS (Pre) 2013
(1) राजा भोज (2) महिपाल
(3) महेंद्रपाल प्रथम (4) इंद्र-तृतीय

14. निम्नलिखित में से कौन-सा अभिलेख हिंद-यवनों पर वासुदेव संप्रदाय के प्रभाव को संकेतित करता है? **RAS (Pre)2013**
(1) बेसनगर स्तंभ अभिलेख
(2) सुई विहार अभिलेख
(3) राबटाक अभिलेख
(4) जूनागढ़ अभिलेख

15. मध्यकालीन ग्रंथ 'मान कौतूहल' की विषयवस्तु है: **RAS (Pre) 2013**
(1) आमेर के राजा मान सिंह का बंगाल
(2) हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायन के रागों का संकलन
(3) नागौर की रानी मानकँवर के मनोविनोद
(4) साहित्यिक पहेलियाँ

16. निम्नलिखित में से कौन-सी इमारतें फतेहपुर सीकरी के हरमसरा खंड का हिस्सा हैं? **RAS (Pre) 2013**
(i) जोधाबाई महल (ii) पंच महल
(iii) मरियम का घर (iv) बीरबल का घर
सही विकल्प का चयन कीजिये:
(1) केवल (i) और (iii)
(2) केवल (i) और (iv)
(3) केवल (i), (ii) और (iii)
(4) उपर्युक्त सभी

17. महाराणा सांगा ने इब्राहिम लोदी को किस युद्ध में परास्त किया था?
(1) खातोली का युद्ध (2) सारंगपुर का युद्ध
(3) सिवाना का युद्ध (4) खानवा का युद्ध

18. किस राजपूत शासक ने मुगलों के विरुद्ध निरंतर स्वतंत्रता का संघर्ष जारी रखा और समर्पण नहीं किया?
(1) बीकानेर के राजा रायसिंह
(2) मारवाड़ के राव चंद्रसेन
(3) आमेर के राजा भारमल
(4) मेवाड़ के महाराजा अमर सिंह

19. पृथ्वीराज विजय का लेखक कौन है?
(1) चंदबरदाई (2) पृथ्वीराज चौहान
(3) जयानक (4) नयनचंद्र सूरि

20. 19वीं शताब्दी का प्रथम इतिहासकार जिसने राजस्थान की सामतंवादी व्यवस्था के बारे में लिखा, वह कौन था?
(1) कर्नल जेम्स टॉड (2) डॉ. एल.पी. टैसीटोरी
(3) जॉर्ज गियर्सन (4) जॉन थॉमस

21. वह कौन-सा मेवाड़ का मशहूर शासक था, जिसने अचलगढ़ के किले की मरम्मत करवाई थी?
(1) राणा रतन सिंह (2) महाराणा कुंभा
(3) राणा सांगा (4) राणा राजसिंह

22. वह कौन-सा अभिलेख है, जो महाराणा कुंभा के लेखन पर प्रकाश डालता है?
(1) कुंभलगढ़ शिलालेख (1460 ई.)
(2) कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति (1460 ई.)
(3) जगन्नाथ राय शिलालेख (1652 ई.)
(4) राज प्रशस्ति (1676 ई.)

23. खानवा में बाबर के विरुद्ध सांगा की सहायता के लिये किसके नेतृत्व में मारवाड़ी सेना भेजी गई थी?
(1) राव गंगा (2) मालदेव
(3) बिरमदेव (4) सुजा

24. राजस्थान के प्रत्येक राज्य में महकमा बकायत होता था, जो:
(1) अच्छी फसल के समय शेष राजस्व वसूलता था।
(2) राजा के बकायों का भुगतान करता था।
(3) सरकारी कर्मचारियों की बकाया संग्रह करता था।
(4) राजाओं के लिये ऋण संग्रह करता था।

25. अंग्रेज़ों से संधि करने वाला राजस्थान का प्रथम राज्य था:
(1) कोटा (2) जयपुर
(3) जोधपुर (4) उदयपुर

26. औरंगज़ेब ने जोधपुर के शासक जसवंत सिंह को 1658 ई. में धरमत के युद्ध मे पराजित किया। धरमत किस राज्य में स्थित है?
(1) राजस्थान (2) मध्य प्रदेश
(3) गुजरात (4) उत्तर प्रदेश

27. 1733 ई में 'जीज मुहम्मदशाही' पुस्तक जो नक्षत्रों के ज्ञान से संबंधित है, के लेखक हैं:
(1) जोधपुर के राजा जसवंत सिंह
(2) आमेर के राजा भारमल
(3) जयपुर के सवाई जयसिंह
(4) उदयपुर के महाराणा अमरसिंह

28. बीकानेर के 'राठौराँ री ख्यात' के लेखक थे:
(1) दयालदास (2) श्यामल दास
(3) सूर्यमल मिश्रण (4) नैणसी

29. चीनी यात्री जिसने भीनमाल की यात्रा की थी:
(1) फाह्यान (2) संगयुन
(3) ह्वेनसांग (4) इत्सिंग

30. जयसिंह सूरी लेखक थे:
(1) हम्मीरमदमर्दन (2) हम्मीर महाकाव्य
(3) हम्मीर-हठ (4) हम्मीर रासो

31. गढ़बीठली दुर्ग है:
(1) मेहरानगढ़ (2) तारागढ़-अजमेर
(3) तारागढ़-बूँदी (4) रणथंभौर

32. सूफी संत ख्वाज़ा मुईनुद्दीन चिश्ती किसके शासनकाल में राजस्थान आए थे?
(1) महाराणा प्रताप सिंह (2) राणा सांगा
(3) राणा कुंभा (4) पृथ्वीराज चौहान

33. राजपूतों के किस वंश ने जयपुर रियासत पर शासन किया था?
(1) सिसोदिया (2) कछवाहा
(3) राठौड़ (4) हाड़ा

34. राजस्थान का ग्रामीण विश्नोई संप्रदाय किस लोकदेवता का अनुयायी है?
(1) हड़भूजी (2) मेहाजी
(3) जंभोजी (4) पाबूजी

35. हम्मीर महाकाव्य में चौहानों को बताया गया है:
(1) चंद्रवंशी (2) ब्राह्मण
(3) यदुवंशी (4) सूर्यवंशी

36. जोधपुर के निकट ओसियाँ में मंदिरों का समूह जिनकी देन है, वे हैं:
(1) राठौड़ (2) गुहिलोत
(3) चौहान (4) प्रतिहार

37. मेवाड़ में रागमाला, रसिकप्रिया, गीतगोविंद जैसे विषयों में लघु-चित्र शैली किस शासक के काल में चरम सीमा पर पहुँची?
(1) महाराणा प्रताप
(2) महाराणा अमर सिंह प्रथम
(3) महाराणा कर्ण सिंह
(4) महाराणा जगत सिंह

38. प्रसिद्ध भक्त कवयित्री मीरा के पति का नाम था:
(1) राणा रतन सिंह (2) राजकुमार भोजराज
(3) राणा उदय सिंह (4) राणा सांगा

39. चंदबरदाई द्वारा लिखित पुस्तक का नाम था:
(1) पृथ्वीराज रासो (2) पृथ्वीराज चरित
(3) पृथ्वी ख्यात (4) पृथ्वीनाथ

40. 4000 वर्ष पुरानी सभ्यता के पुरातात्त्विक अवशेष उदयपुर के समीप एक गाँव में पाए गए हैं, वह गाँव है:
(1) जगत (2) देलवाड़ा
(3) एकलिंग जी (4) आहड़

41. विश्नोई संप्रदाय के संस्थापक थे:
(1) रामदेवजी (2) पाबूजी
(3) जंभोजी (4) हड़बूजी

42. प्रसिद्ध चौरासी खंभों की छतरी कहाँ स्थित है?
(1) कोटा (2) झालावाड़
(3) जयपुर (4) बूँदी

43. प्रसिद्ध आदिवासी मेला बेणेश्वर किस ज़िले में आयोजित होता है?
(1) बाँसवाड़ा (2) डूँगरपुर
(3) उदयपुर (4) बारां

44. मध्यकालीन राजस्थान के किस शासक को 'अभिनव भरताचार्य' के नाम से पुकारा गया?
(1) पृथ्वीराज चौहान
(2) महाराणा कुंभा
(3) सवाई जयसिंह
(4) महाराजा मान

45. गुर्जरों को किस शासक ने पराजित किया?
(1) प्रभाकरवर्धन (2) राज्यवर्धन
(3) हर्षवर्धन (4) शशांक

46. अभिलेखों के आधार पर राजस्थान के 9वीं से 12वीं सदी के मध्य किस देवता की सर्वोच्च रूप में पूजा की जाती थी?
(1) शिव (2) विष्णु
(3) ब्रह्मा (4) सूर्य

47. सास-बहू का मंदिर स्थित है:
(1) अरथूना में (2) नागदा में
(3) सोमनाथ में (4) आहड़ में

48. श्री अजयपाल संस्थापक थे:
(1) अलवर के (2) भरतपुर के
(3) अजमेर के (4) चित्तौड़गढ़ के

49. राजस्थान का प्रथम चौहान राज्य था:
(1) अजमेर (2) रणथंभौर
(3) हाड़ौती (4) नाडोल

50. पन्नाधाय एवं दुर्गादास के जीवन से जो विशेष प्रेरणा मिलती है, वह है:
(1) धोखा न देने की
(2) सेवा भावना की
(3) देश के लिये बलिदान की
(4) साहस एवं धैर्य की

51. राजपूतों के नगरों और प्रासादों का निर्माण पहाड़ियों में हुआ क्योंकि:
(1) वहाँ शत्रुओं के विरुद्ध प्राकृतिक सुरक्षा के साधन थे।
(2) वह प्रकृति प्रेमी थे।
(3) वह नगर जीवन से घृणा करते थे।
(4) वह बर्बर थे।

52. हल्दीघाटी युद्ध के पीछे अकबर का मुख्य उद्देश्य था:
(1) राणा प्रताप को अपने अधीन लाना
(2) राजपूतों में फूट डालना
(3) मानसिंह की भावना को संतुष्ट करना
(4) साम्राज्यवादी नीति

53. पशु-पक्षियों को जिस चित्रकला में विशेष स्थान मिला, वह है:
(1) बूँदी शैली (2) किशनगढ़ शैली
(3) नाथद्वारा शैली (4) अलवर शैली

54. राजस्थान में वल्लभ संप्रदाय का प्रमुख धार्मिक स्थल है:
(1) किशनगढ़ (2) कांकरोली
(3) नाथद्वारा (4) उदयपुर

55. लाटा व कुंता क्या हैं?
(1) प्राचीन मंदिर (2) लगान के प्रकार
(3) राजवंश (4) शिलालेख

56. सोमेश्वर मंदिर है:
(1) किशनगढ़ में (2) अजमेर में
(3) किराडू में (4) कोटा में

57. रामदेवरा प्रसिद्ध है:
(1) स्थापत्य कला हेतु
(2) जैन मंदिरों हेतु
(3) विष्णु मंदिर हेतु
(4) सांप्रदायिक सद्भाव हेतु

उत्तरमाला

1. (2)	2. (4)	3. (4)	4. (3)	5. (1)	6. (1)	7. (4)	8. (2)	9. (2)	10. (1)
11. (1)	12. (4)*	13. (3)**	14. (1)	15. (2)	16. (1)	17. (1)	18. (2)	19. (3)	20. (2)
21. (2)	22. (2)	23. (2)	24. (1)	25. (1)	26. (2)	27. (3)	28. (1)	29. (3)	30. (1)
31. (2)	32. (4)	33. (2)	34. (3)	35. (4)	36. (4)	37. (2)	38. (2)	39. (1)	40. (4)
41. (3)	42. (4)	43. (2)	44. (2)	45. (3)	46. (1)	47. (2)	48. (3)	49. (1)	50. (3)
51. (1)	52. (1)	53. (1)	54. (3)	55. (2)	56. (3)	57. (4)			

- * राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा इस प्रश्न का उत्तर 3, 4 (अजमेर और पुष्कर) माना गया है। पुष्कर अजमेर ज़िले में स्थित है।
- ** राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा इस प्रश्न का उत्तर 2, 3 (महिपाल एवं महेन्द्रपाल प्रथम) माना गया है।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 15–20 शब्दों में दीजिये)

1. घोसुंडी अभिलेख का क्या महत्त्व है? **RAS (Mains) 2016**
2. दुल्हेराय
3. कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति
4. मंडन सूत्रधार
5. गलिया कोट
6. लौद्रवा
7. किराडू
8. गणेश्वर सभ्यता
9. गालियाकोट
10. भटनेर का किला
11. खानवा का युद्ध
12. तारागढ़
13. लोहागढ़
14. कालीबंगा
15. मेवाड़
16. गागरोन का किला
17. बैराठ
18. लाटा, कुंता
19. जागीर
20. जयचंद
21. ओसियाँ
22. माध्यमिका
23. चौहान वंश
24. धरमत युद्ध
25. मीराबाई

लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 50–50 शब्दों में दीजिये)

1. तूंगा युद्ध
2. राणा कुंभा का सांस्कृतिक योगदान
3. जौहर एवं केसरिया
4. चित्तौड़गढ़
5. कुंभलगढ़
6. गिरी सुमेल युद्ध
7. मांडणे
9. वीर हाड़ी रानी
10. जंतर-मंतर
11. गुर्जर-प्रतिहार वंश
12. आमेर
13. सवाई जयसिंह
14. वैद्यनाथ मंदिर प्रशस्ति
15. मुण्डियार री ख्यात

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 100 या 200 शब्दों में दीजिये)

1. राजस्थान के प्रमुख शिलालेखों का वर्णन करें।
2. राजस्थान के प्रमुख राजवंशों पर टिप्पणी कीजिये।
3. राजस्थान की मध्यकालीन भू-राजव्यवस्था पर प्रकाश डालिये।
4. राजस्थान के बारे में ऐतिहासिक जानकारी प्रदान करने वाले साहित्यिक स्रोतों का वर्णन कीजिये।
5. राजस्थान में संपन्न सभी साकाओं को क्रमानुसार रखते हुए टिप्पणी कीजिये।

अध्याय
2

राजस्थान का स्वतंत्रता संग्राम (Freedom Struggle of Rajasthan)

सन् 1707 में औरंगज़ेब की मृत्यु के पश्चात् उत्तराधिकार युद्ध प्रारंभ हो गया। उधर मराठों ने अपनी शक्ति बढ़ानी प्रारंभ कर दी। बाजीराव पेशवा के राज्य की सीमा आगरा और दिल्ली को छूने लगी। पेशवा की आज्ञा से होल्कर और सिंधिया राजस्थान के राजाओं से चौथ वसूलने लगे। दोनों मराठा घरानों ने पिंडारियों के साथ मिलकर राजस्थान की विभिन्न रियासतों को परेशान किया। अत: इस समस्या के समाधान हेतु 17 जुलाई, 1734 को मेवाड़ के महाराणा जगत सिंह की अध्यक्षता में राजस्थान के सभी राजा हुरड़ा (भीलवाड़ा) में एकत्र हुये। इसमें उन्होंने संयुक्त रूप से एक समझौता कर मराठों का सामना करने का निर्णय लिया। परंतु ईर्ष्यावश कुछ राजा करार से अलग हो गए। जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और कोटा के राजाओं ने अब मुगल बादशाह मुहम्मद शाह के नेतृत्व में मराठों के विरुद्ध सैनिक अभियान शुरू किया, किंतु आपसी फूट के कारण यह अभियान असफल रहा।

दूसरी ओर अंग्रेज़ तेज़ी से भारत में पैर जमा रहे थे। अंग्रेज़ फ्राँसीसियों को हराने के बाद 1757 ई. में, प्लासी के युद्ध में नवाब सिराजुद्दौला को हराकर बंगाल के स्वामी बन गए। इस समय राजस्थानी राजा मराठों और पिंडारियों के आक्रमण से त्रस्त थे तथा वे लड़खड़ाती मुगल सल्तनत के भरोसे अपने को सुरक्षित महसूस नहीं कर सकते थे। अत: इनके पास अंग्रेज़ों की शरण में जाने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं था। अंग्रेज़ों के पास राजस्थान एवं देश के अन्य राजाओं को स्वयं के संरक्षण में लेने का यह एक स्वर्णिम अवसर था। लॉर्ड हार्डिंग्स ने इस संबंध में **आश्रित पार्थक्य (Subordinate Alliance)** की नीति का पालन किया, जिसका पहला शिकार हैदराबाद का निजाम हुआ।

राजस्थान में ब्रिटिश संधियाँ

राजस्थान में अंग्रेज़ों की प्रथम संधि नवंबर 1817 में करौली में हुई। इसके बाद केवल 14 माह के अल्प समय में ही सन् 1818 तक सभी रियासतों ने ईस्ट इंडिया कंपनी से अलग-अलग संधियाँ कर मराठों और पिंडारियों के आक्रमणों से राहत की साँस ली। अंग्रेज़ों ने इसी समय अजमेर का इलाका भी दौलतराम सिंधिया से प्राप्त कर लिया था।

ईस्ट इंडिया कंपनी और राजस्थान की विभिन्न रियासतों के बीच हुए अहदना में कहने मात्र को संधि पत्र थे। राजाओं ने उक्त संधि-पत्रों के फलस्वरूप अंग्रेज़ों को (मराठों को दी जाने वाली 'चौथ' के स्थान पर) 'खिराज' (एक 'कर' का प्रकार) देना स्वीकार किया। ईस्ट इंडिया कंपनी ने रियासतों की रक्षा की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले ली और यह पाबंदी लगा दी कि वे अन्य किसी रियासत के साथ किसी प्रकार की संधि या अहदनामा नहीं कर सकेंगे। अहदनामों में राजस्थान की अधिकतर रियासतों को अंदरूनी मामलों में खुद मुख्तारी अर्थात् आंतरिक स्वतंत्रता दी गई थी। किंतु अंग्रेज़ों ने अपनी कुटिल नीतियों के तहत उक्त रियासतों के अंदरूनी मामलों में सक्रिय हस्तक्षेप प्रारंभ कर दिया। **जोधपुर के महाराजा मान सिंह** को अपने शासनकाल के दौरान पग-पग पर अंग्रेज़ों के हस्तक्षेप का सामना करना पड़ा और अंत में स्वयं को असहाय पाकर साधू बनना पड़ा। जयपुर के महाराजा (राम सिंह) की नाबालिगी के समय महारानी ने अंग्रेज़ों की इच्छा के विपरीत झूंथाराम सिंघवी को अपना प्रधानमंत्री नियुक्त किया, जिसकी परिणति यह हुई कि राज्य के कई उच्च अधिकारियों को फाँसी दे दी गई।

इन घटनाओं से राजस्थान के राजा किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गए। वे अहदनामों (संधि-पत्र) में निहित आंतरिक स्वतंत्रता की शर्तों को ही भूल गए। इस प्रकार देश की अन्य देशी रियासतों की तरह राजस्थान की रियासतों पर भी अंग्रेज़ों की सार्वभौमिक सत्ता स्थापित हो गई। राजाओं के अपमान की यह चरम सीमा थी। दूसरी ओर जो अंग्रेज़ व्यापारी बनकर इस देश में आए थे, वे धीरे-धीरे सर्वशक्तिमान बनते जा रहे थे।

राजस्थान में राजा असहाय बन चुके थे। इनके वंश परंपरागत अधिकारों पर कुठाराघात होने लगा। कंपनी ने राजाओं के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करके देशी नरेशों की प्रभुसत्ता पर चोट की। स्वयं उनकी स्थिति कंपनी के सामंतों व जागीरदारों जैसी हो गई। कंपनी की नीतियों से सामंतों के पद, मर्यादा व अधिकारों को भी आघात लगा। कंपनी द्वारा अपनाई गई आर्थिक नीतियों के परिणामस्वरूप राजा, सामंत, किसान, व्यापारी, शिल्पी एवं मज़दूर सभी पीड़ित हुए। कंपनी के साथ की गई संधियों के कई दुष्परिणाम सामने आए, जिन्होंने 1857 की क्रांति की पृष्ठभूमि बनाई।

अध्याय
3

राजस्थानी कला (Rajasthani Art)

कला सिर्फ एक शब्द नहीं है। इसकी अर्थ-व्यापकता के अनेक क्षेत्र हैं। भाषा, संस्कृति, इतिहास, साहित्य और समाज में यह अनेक रूपों में स्थापित है।

'कला' शब्द की व्युत्पत्ति 'संस्कृत' की 'कला' धातु से हुई है, जिसका अर्थ 'संख्यान' से है। शब्द संख्यान का आशय है– स्पष्ट वाणी में प्रकट करना। यानी 'कला' शब्द का आशय है– जिसे स्पष्ट और व्यवस्थित रूप से अभिव्यक्त किया जा सके। 'कला' शब्द के अंग्रेज़ी अनुवाद 'आर्ट' का आशय भी कौशल या निपुणता से है। यानी कला सौंदर्यानुभूति एवं सृजनात्मकता का प्रतीक है।

- राजस्थान में प्राचीन काल से ही विभिन्न धर्मों के अनुयायियों द्वारा मंदिर, स्तंभ, मठ, मस्जिद और छतरियों का निर्माण किया जाता रहा है। इनमें से अनेक जीर्णावस्था में तो कुछ अच्छी अवस्था में आज भी विद्यमान हैं।
- प्रवृत्तियों के आधार पर तो कला के अनेक रूप हैं, किंतु अध्ययन के लिहाज़ से इसका सामान्य वर्गीकरण निम्नलिखित है–

3.1 स्थापत्य कला

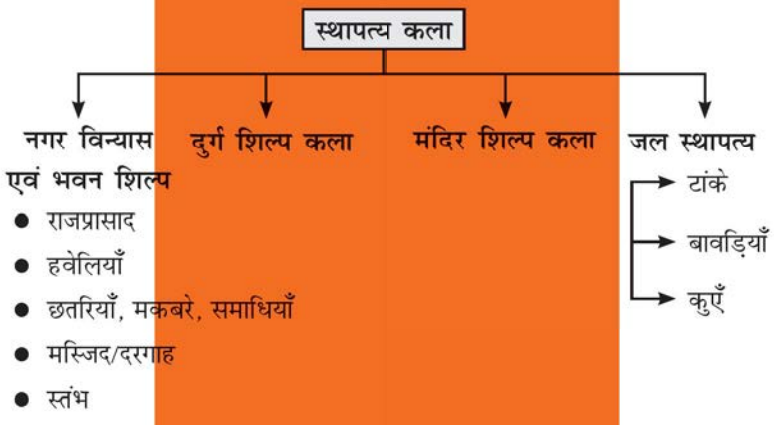

सामान्य परिचय

- वास्तुकला के अंतर्गत भवन निर्माण, दुर्ग निर्माण, बांध, देवालयों, स्मारकों, छतरियों, स्तंभों इत्यादि को रखा जाता है जिसमें मुख्य तत्त्व लंबाई, चौड़ाई व मोटाई है। सूक्ष्मता स्थापत्य कला की विशेषता है।
- यहाँ की स्थापत्य कला की विशेषताएँ– ऊँचे शिखर, खंभे, सीधे पाट, अलंकृत आकृतियाँ, कलश इत्यादि थीं किंतु जब राजस्थान मुगलों के संपर्क में आया तो यहाँ की स्थापत्य कला में परिवर्तन दिखने लगा।
- राजस्थानी स्थापत्य कला का जनक राणा कुंभा को माना जाता है जो शिल्पशास्त्री मंडन द्वारा वास्तुकला पर रचित पाँच ग्रंथों से प्रभावित था।
- 15वीं शताब्दी में मेवाड़ के शिल्पकार मंडन द्वारा प्रमुख 5 ग्रंथ लिखे गए, जो इस प्रकार हैं–

अध्याय
4

राजस्थानी संस्कृति
(Rajasthani Culture)

संस्कृति समाज और जीवन के विकास के मूल्यों की सम्यक् संरचना है। यह समाज में अंतर्निहित गुणों और उच्चतम आदर्शों के समग्र रूप का नाम है, जो उस समाज के सोचने-विचारने, कार्य करने, खाने-पीने, बोलने, नृत्य, गायन, साहित्य, कला, वास्तु आदि में परिलक्षित होती है।

'संस्कृति' का शाब्दिक अर्थ उत्तम या सुधरी हुई स्थिति से है। संस्कृति किसी समाज में पाए जाने वाले उच्चतम मूल्यों और आदर्शों की वह चेतना है जो सामाजिक प्रथाओं, रीति-रिवाजों, चित्तवृत्तियों, भावनाओं, मनोवृत्तियों, रहन-सहन और आचरण के साथ-साथ उनके द्वारा भौतिक पदार्थों को विशिष्ट स्वरूप दिये जाने में अभिव्यक्त होती है।

संक्षेप में 'संस्कृति' अपनी बुद्धि के प्रयोग से अपने चारों ओर की प्राकृतिक परिस्थितियों को निरंतर सुधारती है और उन्नत करती रहती है। ऐसी प्रत्येक जीवन-पद्धति, रीति-रिवाज, रहन-सहन, आचार-विचार, नवीन अनुसंधान और वह आविष्कार, जिससे मनुष्य के जीवन स्तर में बदलाव होता है और वह विचारों से पहले की अपेक्षा ऊँचा उठता है तथा सभ्य बनता है, संस्कृति के ही अंग हैं। सरल शब्दों में कह सकते हैं कि संस्कृति उस विधि का प्रतीक है जिसमें हम सकारात्मक दिशा में सोचते और कार्य करते हैं।

राजस्थान के परिप्रेक्ष्य में, रंग-बिरंगी छटाओं वाला यह राज्य, अपने विशिष्ट पहनावे, लोकगीतों, आपसी मेल-जोल तथा भाईचारे के लिये जाना जाता है, यहाँ पधारो म्हारे देस की परंपरा में, वर्ष भर चलने वाले त्यौहारों, मेलों तथा विशिष्ट राजस्थानी व्यंजनों (केर-सांगरी, बाजरे की रोटी) की रंगत तथा मिठास घुली हुई है, जो राजस्थान की सांस्कृतिक छटा को निखारती है। रणबाँकुरों, वीरों, वीरांगनाओं के त्याग, अमर बलिदान यहाँ के कण-कण में बिखरे हुए हैं एवं इस वीरभूमि की संस्कृति तथा ऐतिहासिकता से रू-बरू करवाते हैं।

इसलिये कहा भी जाता है– 'माटी बांधे पैंजनी, बंगड़ी पहने बादली'।

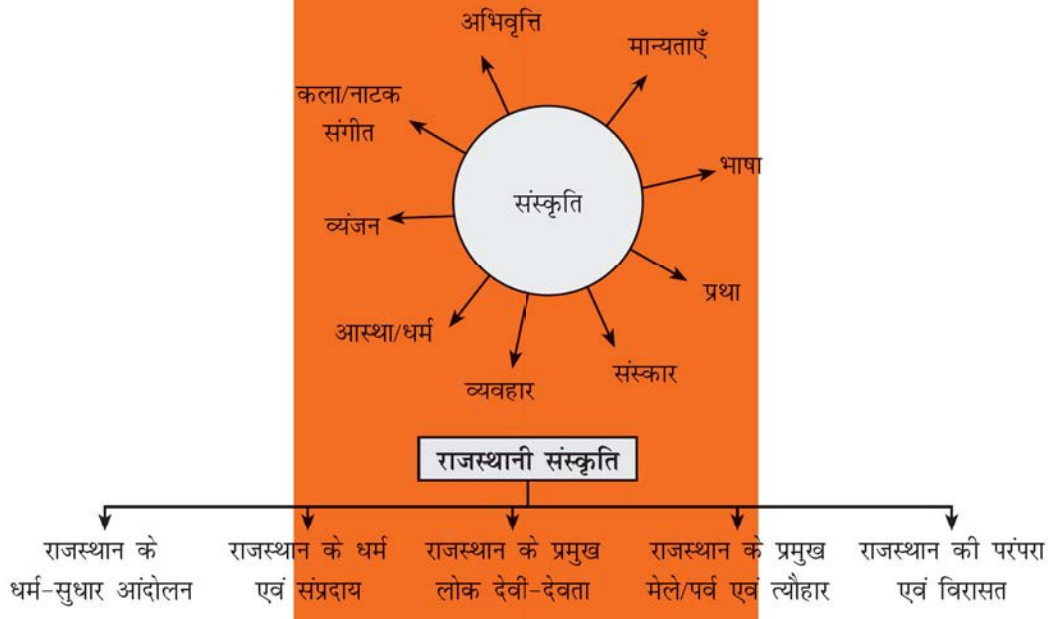

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456